# गणेशोत्सव 2026 : देश में 20 लाख से ज्यादा मंडप, 25,000 करोड़ का कारोबार

दृष्टि शर्मा

**भोपाल, 10 सितंबर. गणेशोत्सव अब सिर्फ आस्था का पर्व नहीं रहा. यह देश की सबसे बड़ी सीजनल इकोनॉमी में से एक बन चुका है. मूर्तिकारों की कार्यशालाओं से लेकर पंडाल के कारीगरों तक और फूल मंडियों से लेकर मिठाई की दुकानों तक, हर कड़ी में करोड़ों रुपये का लेन-देन होता है. देशभर में 20 लाख से ज्यादा गणेश मंडप सजते हैं और इस पूरी चेन से लाखों लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार मिलता है.**

### ■ पेण से पूरी दुनिया में जाती हैं मूर्तियां

रायगढ़ के पेण कस्बे को गणेश मूर्तियों की राजधानी कहा जाता है. 2026 में यहां 70 लाख से ज्यादा गणेश प्रतिमाएं तैयार की गईं. इनमें से करीब 15 लाख मूर्तियां अमेरिका, यूएई, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे देशों में बसे भारतीय समुदाय की मांग को पूरा करने के लिए भेजी गई हैं. दिलचस्प बात यह है कि विदेशों के लिए ऑर्डर साल की शुरुआत से ही आने लगते हैं. कोलकाता के कारीगर गणेश प्रतिमा निर्माण के लिए दूसरे शहरों तक पहुंचते हैं. चेन्नई में मूर्ति कलाकार तारक नाथ पॉल बापी पिछले 25 वर्षों से गणेश प्रतिमाएं बना रहे हैं. लखनऊ में 7 फीट की गणेश प्रतिमा तैयार करने के लिए कलाकार नमिता पाल ने कोलकाता के कारीगरों की मदद ली. अयोध्या में 2025 में कोलकाता से आए 20 कारीगर गणेश प्रतिमाएं बना रहे थे, जबकि नानपारा में 7 कारीगर पहुंचे थे. हर साल करीब दो महीने गणेश प्रतिमाएं तैयार करने के लिए काम करते हैं.

### ■ पंडाल, सजावट और पूजा सामग्री पर लाखों खर्च

महाराष्ट्र में 7 लाख से ज्यादा मंडप सजते हैं, कर्नाटक में 5 लाख, जबकि आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और मध्य प्रदेश में करीब-करीब 2-2 लाख मंडप लगते हैं. अगर एक मंडप पर औसतन न्यूनतम 50,000 खर्च भी मान लिया जाए, तो सिर्फ इसी मद से 10,000 करोड़ से ज्यादा का कारोबार बैठता है.

### ■ 30,000 करोड़ का कारोबार

अनुमानों के मुताबिक 2024 में गणेशोत्सव से जुड़ा कुल कारोबार 25,000 करोड़ से ज्यादा का रहा, जो 2025 में बढ़कर करीब 30,000 करोड़ तक पहुंच गया. यह ग्रोथ बताती है कि त्योहार का आर्थिक दायरा साल-दर-साल तेजी से बढ़ रहा है. पंडाल सजावट से लेकर इवेंट मैनेजमेंट, टूरिज्म और ज्वेलरी तक हर सेक्टर में इसका असर दिख रहा है. इस बार कारोबार और बढ़ने की उम्मीद की जा रही है.

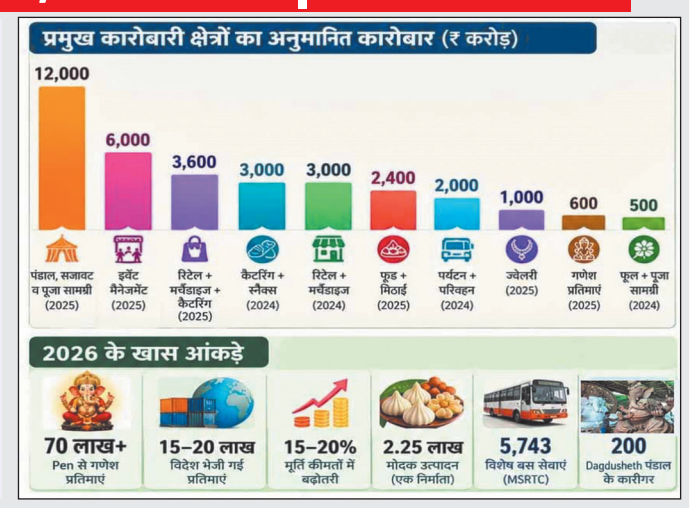


# भरोसे के मंच पर विकास के लिए जुटे दुनिया के दिग्गज

## ब्रिक्स बिजनेस फोरम में नवाचार, सहयोग पर हुई बात

**नवभारत न्यूज**

**नई दिल्ली, 11 सितंबर. तनाव और अस्थिरता के दौर के बीच शुक्रवार को देश की राजधानी में दुनिया की कई दिग्गज हस्तियां आपसी सहयोग और नवाचार के सूत्र लेकर एक मंच पर जुटे. यह मंच है ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 2026.**

ब्रिक्स बिजनेस फोरम के नेताओं के सत्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता की थीम लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए निर्माण है. उन्होंने कहा कि पिछले 12 वर्षों में भारत ने इस मंत्र को अपनी आर्थिक और व्यापार नीतियों की नींव बनाया है.

### यूपीआई दुनिया का सबसे भरोसेमंद प्लेटफॉर्म

उन्होंने कहा कि भारत की यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) ने बड़े पैमाने पर वित्तीय समावेशन और डिजिटल लेनदेन को नई गति दी है. आज दुनिया के वास्तविक समय में होने वाले भुगतान में 50 प्रतिशत भुगतान इस तकनीक के जरिये होते हैं. प्रधानमंत्री ने कहा कि वैश्विक स्तर पर व्यापार बाधाएं बढ़ रही हैं, वहीं भारत आर्थिक पुल बना रहा है.

### प्रतिस्पर्धा से डरते हैं पश्चिमी देश : पुतिन

ब्रिक्स बिजनेस फोरम में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि ब्रिक्स देशों के आपसी संबंध मजबूत हो रहे हैं. आपसी कारोबार को बढ़ावा देना हमारा लक्ष्य है. जीडीपी में जी-7 से ब्रिक्स आगे निकल गया है. उन्होंने कहा कि पश्चिमी देश प्रतिस्पर्धा करने से डरते हैं.

### ब्रिक्स ने खुद को मजबूत किया : विएरा

ब्राजील के विदेश मंत्री माउरो विएरा ने कहा कि दुनिया के वैश्विक परिदृश्य में गहरे बदलाव हो रहे हैं और इसके पीछे ग्लोबल साउथ की अर्थव्यवस्थाओं की दशकों से जारी लगातार वृद्धि प्रमुख वजह है. भारत दुनिया के समक्ष हर क्षेत्र में मजबूती से खड़ा है.

# ब्रिक्स सम्मेलन पर कांग्रेस में उजागर हुए मतभेद

## चिदंबरम को लगा बेकार, थरूर ने बताया गौरव

**नवभारत न्यूज नेटवर्क**

**नई दिल्ली, 11 सितम्बर. कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने ब्रिक्स की अहमियत बताते हुए कहा कि यह समूह ग्लोबल साउथ के देशों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है.**

उन्होंने कहा कि ग्लोबल साउथ में 100 से ज्यादा देश हैं, लेकिन ब्रिक्स में शामिल 11 प्रमुख देश अलग-अलग विचारों और क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं. भारत इस समय ब्रिक्स की अध्यक्षता कर रहा है और ऐसे में इसकी मेजबानी देश के लिए खास महत्व रखती है. 11 ब्रिक्स देश मिलकर दुनिया की ज्यादातर आबादी और वैश्विक जीडीपी के करीब 41 फीसदी हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं. उनके

मुताबिक, यही वजह है कि ब्रिक्स को दुनिया के बाकी देशों को भी गंभीरता से लेना चाहिए.ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी को थरूर ने भारत के लिए प्रतिष्ठा का विषय बताया. वैश्विक स्तर पर इस आयोजन की काफी अहमियत है और इसकी मेजबानी करना कोई छोटी बात नहीं है. इस आयोजन पर पूरी दुनिया की नजर है. वहीं, पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम ने हालिया ब्रिक्स शिखर सम्मेलनों से भारत को मिले लाभों पर सवाल उठाया.

# ममता के बागियों को भाजपा ने छोड़ा

## बंगाल नगरीय निकाय चुनाव में खेला 'अपना दम' वाला दांव

**नवभारत न्यूज नेटवर्क**

**कोलकाता, 11 सितम्बर. सयोनी घोष, यूसुफ पठान हों या काकोली घोष... सभी ने बंगाल चुनाव में टीएमसी की हार के बाद ममता का साथ छोड़ा. टीएमसी के बागी सांसदों ने एनडीए का हिस्सा बनना पसंद किया.**

वे सभी एसीपीआई यानी नेशनलिस्ट सिटिजन्स पार्टी ऑफ इंडिया में शामिल हुए. यह एनसीपीआई दिल्ली में भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए का हिस्सा है. अब इन बागी सांसदों को भाजपा ने ही झटका दिया है. बीजेपी ने पश्चिम बंगाल में होने वाले आगामी नगर निकाय चुनाव अकेले लड़ने का फैसला किया है. भाजपा ने तृणमूल कांग्रेस यानी टीएमसी के उन बागी सांसदों के साथ गठबंधन की संभावना को खारिज कर दिया है, जो अब नेशनलिस्ट सिटिजन्स पार्टी ऑफ इंडिया का हिस्सा हैं.

बीजेपी का यह फैसला इसलिए अहम है क्योंकि इस साल हुए विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत हासिल करने के बाद अब पार्टी की नजर कोलकाता और हावड़ा के नगर निकाय चुनावों पर है. इन दोनों चुनावों को बीजेपी के लिए बड़ी राजनीतिक परीक्षा माना जा रहा है. केएमसी यानी कोलकाता नगर निगम और हावड़ा नगर निगम के चुनाव दुर्गा पूजा के बाद होने की उम्मीद है. दोनों नगर निगमों के वार्डों की सीमाओं में बड़े बदलाव किए जा रहे हैं. इसे परिसीमन कहा जाता है. इसके तहत मतदाताओं की संख्या और इलाकों के आधार पर वार्डों की सीमाएं फिर से तय की जाती हैं. बंगाल प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य ने हाल में कहा, पश्चिम बंगाल में बीजेपी का कोई गठबंधन सहयोगी नहीं है. हम कोलकाता और हावड़ा नगर निकाय चुनाव अपने दम पर लड़ेंगे और जीतेंगे.

### 209 सीटों पर दांव

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में प्रदर्शन के बाद बीजेपी को कोलकाता में भी अपना आधार मजबूत होने का भरोसा है. केएमसी में पहले बीजेपी की स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी. लेकिन विधानसभा चुनाव में कोलकाता की ज्यादातर सीटों पर लोगों ने बीजेपी को वोट दिया. केएमसी चुनाव की जिम्मेदारी संभाल रहे बीजेपी नेता रितेश तिवारी ने कहा कि पार्टी सभी 209 सीटों पर चुनाव लड़ेगी और बड़ी जीत हासिल करेगी.

### बैंक धोखाधड़ी मामले में ईडी ने कसा शिकंजा

**पटना.** बैंक लोन धोखाधड़ी और मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गया के एक होटल ग्रुप के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है. ईडी की टीम ने शुक्रवार को बिहार के गया में आधा दर्जन ठिकानों पर छापेमारी की. कार्रवाई रामनंदी होटल्स एंड रिसॉर्ट्स लिमिटेड, इसके निदेशक अखौरी गोपाल और उनके बेटों निशांत और नितेश से जुड़े मामले में की गई है. जांच एजेंसी ने गयाजी और बोधगया समेत आधा दर्जन स्थानों पर तलाशी अभियान चलाया. यह कार्रवाई प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के तहत की गई है. मामला सीबीआई की एफआईआर और चार्जशीट के आधार पर दर्ज किया गया है.

# नौकरी छूटी तो यूएस में टिकना मुश्किल

### ▶ एच-1बी पर ट्रंप का प्रस्ताव, 60 दिन की राहत होगी खत्म

**वाशिंगटन, 11 सितम्बर (एजेंसी). अमेरिका में नौकरी जाने के बाद एच-1बी वीजा पर काम करने वाले विदेशी कर्मचारियों को अब 60 दिन की राहत नहीं मिलेगी. ट्रंप सरकार ने इस राहत को खत्म करने का प्रस्ताव रखा है.**

मौजूदा व्यवस्था में नौकरी जाने के बाद कर्मचारी को अधिकतम 60 दिन अमेरिका में रहकर दूसरी नौकरी तलाशने या देश छोड़ने की तैयारी करने का मौका मिलता है. प्रस्ताव लागू

हुआ तो नौकरी खत्म होते ही अमेरिका में रुकना मुश्किल हो जाएगा.मौजूदा नियम के तहत कुछ गैर-आप्रवासी वीजा धारकों को नौकरी खत्म होने के बाद अधिकतम 60 दिन का समय मिलता है. इस दौरान वे दूसरी नौकरी तलाश सकते हैं, अपना वीजा दर्जा बदलने की कोशिश कर सकते हैं या अमेरिका छोड़ने की तैयारी कर सकते हैं. यह राहत कर्मचारी के खुद नौकरी छोड़ने और कंपनी की ओर से नौकरी खत्म किए जाने, दोनों स्थितियों में लागू होती है. अमेरिका के गृह सुरक्षा विभाग ने 60 दिन की राहत खत्म करने का प्रस्ताव दिया है. जिस नौकरी के आधार पर किसी विदेशी कर्मचारी को अमेरिका में रहने की अनुमति मिली है, उसके खत्म होते ही उसका गैर-आप्रवासी दर्जा भी खत्म हो जाएगा. ऐसे में कर्मचारी को अमेरिका छोड़ना पड़ सकता है, जब तक उसके पास वहां रुकने की कोई दूसरी वैध अनुमति न हो. इस बदलाव का असर भारतीय पेशेवरों पर खास तौर पर पड़ सकता है.

### आज का इतिहास

- **1398 :** मंगोल आक्रमणकारी तैमूर लंग सिंधु नदी के तट पर पहुंचा.
- **1786 :** लार्ड कॉर्नवालिस ने गवर्नर जनरल बना.
- **1873 :** पहले टाइपराइटर की बिक्री शुरू.
- **1912 :** फिरोज गांधी का जन्म बॉम्बे (अब मुंबई) में एक पारसी परिवार में हुआ.
- **1928 :** फ्लोरिडा में भीषण तूफान से 6000 लोगों की मौत.
- **1931 :** महात्मा गांधी गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए लंदन पहुंचे.
- **1944 :** अमेरिकी सेना ने पहली बार जर्मनी में प्रवेश किया.

### दुल्हन की तरह सजा भारत मंडपम् और लूटियन दिल्ली

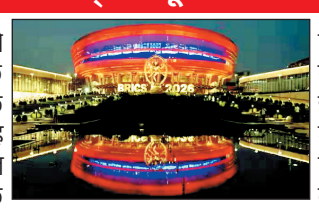

वैश्विक कूटनीति के सबसे बड़े मंचों में से एक 18 वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के लिए न सिर्फ भारत मंडपम को बल्कि लूटियन दिल्ली को एक दुल्हन की तरह सजाया गया है. मुख्य कार्यालय स्थल भारत मंडपम के ठीक बाहर और उसके विशाल द्वारों पर भव्य बागवानी का प्रदर्शन किया गया है, जिसके तहत विशेष रूप से तैयार की गई झाड़ियों और हजारों की संख्या में विदेशी फूलों के पौधों को सजाया गया है. सम्मेलन की मूल भावना को दर्शाने के लिए आयोजन स्थल के बाहरी प्रांगण में विशेष रूप से तैयार किए गए पोस्टर लगाए गए हैं, जिन पर इस वर्ष की मुख्य थीम लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए निर्माण वाले संदेश को बड़ी ही खूबसूरती से उकेरा गया है. वहीं दूसरी ओर भारत मंडपम के आंतरिक हिस्से को बेहद अनूठे और प्रतीकात्मक स्वरूप के साथ तैयार किया गया है. पूरे परिसर की रूपरेखा भारत के आधिकारिक ब्रिक्स प्रतीक चिन्ह से प्रेरित है.

### एक नजर में

#### पत्नी समेत तीन बेटियों की ली जान

**जयपुर.** जयपुर के करधनी थाना इलाके के गोविंदपुरा क्षेत्र में एक ही परिवार के चार सदस्यों की निर्मम हत्या से पूरे इलाके में सनसनी और दहशत का माहौल है. आरोपी राहुल झा ने अपने ही घर में बेहद क्रूरता की हदें पार करते हुए अपनी पत्नी और तीन बेटियों की हत्या कर दी. हमलावर ने घर में मौजूद ईंटों और निर्माण कार्य में इस्तेमाल होने वाले पत्थरों के टुकड़ों से चारों के सिर पर ताबड़तोड़ कई वार किए. इस खौफनाक हमले में चारों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई.

#### सुखबीर बादल ने एसआईटी से मांगी मोहलत

**चंडीगढ़.** बहबल कलां गोलीकांड मामले में शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल शुक्रवार को विशेष जांच दल के सामने पेश नहीं हुए. उन्हें चंडीगढ़ के सेक्टर-32 स्थित पंजाब पुलिस अधिकारी संस्थान में पूछताछ के लिए पहुंचना था.

#### मस्जिद तोड़ने पर रोक, हाईकोर्ट ने मांगा जवाब

**लखनऊ.** सहारनपुर मस्जिद ध्वस्तीकरण मामले में हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से जवाब मांगा है. मामले की अगली सुनवाई 12 अक्टूबर को होगी. इसके साथ ही नगर मजिस्ट्रेट की ओर से छह करोड़ 41 लाख रुपये क्षतिपूर्ति के रूप में वसूलने के आदेश पर भी हाईकोर्ट ने अंतरिम रोक लगा दी है. मस्जिद कमेटी से हर्जाना वसूलने का आदेश जारी किया गया था.

### हस्तियों के ट्वीट

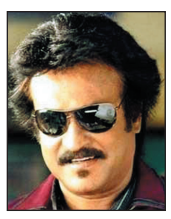

अभिनेता रजनीकांत ने महान तमिल विद्वान और प्रोफेसर सोलोमन पप्पैया के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है. उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट साझा कर दिवंगत विद्वान को श्रद्धांजलि दी. रजनीकांत ने लिखा कि वह ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि सोलोमन पप्पैया की आत्मा को शांति मिले. उन्होंने साहित्यिक मंचों को केवल पढ़े-लिखे और अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि साहित्य और तमिल भाषा को आम लोगों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

अनुपम खेर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर 80 के दशक की एक पुरानी तस्वीर साझा कर अपने फिल्मी सफर को याद किया. उन्होंने बताया कि 1980 के दशक में वह 28 साल के थे, लेकिन फिल्म 'सारांश' में उन्होंने 65 वर्षीय व्यक्ति का किरदार निभाया था. अभिनेता ने लिखा कि उन्हें अपनी पुरानी ऑटोग्राफ वाली तस्वीर काफी तलाशने के बाद मिली. उन्होंने कहा कि तस्वीरें, मेकअप और अभिनय हमें अलग-अलग उम्र और किरदारों में ढलने का मौका देते हैं.

# शिअद के साथ नहीं आएगी भाजपा

### ▶ पार्टी के पंजाब प्रभारी पूनिया ने विस चुनाव को लेकर किया साफ

**नवभारत न्यूज़ नेटवर्क**

**जयपुर, 11 सितम्बर. पंजाब में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर बीजेपी नेता सतीश पूनिया ने बड़ा ऐलान किया है.**

बीजेपी के राष्ट्रीय महासचिव एवं पंजाब प्रभारी राज्यसभा सांसद सतीश पूनिया ने कहा है कि पंजाब में बीजेपी कोई गठबंधन नहीं करेगी. वह अकेले ही सभी सीटों पर चुनाव लड़ेगी. पूनिया ने कहा पंजाब में कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर जंग छिड़ी है. वहां कांग्रेस कलह में उलझी है. ऐसे में प्रभारी बदलने से उसमें लड़ाई कोई कम नहीं होगी. पूनिया ने कहा कि पंजाब में लोग नशे से परेशान हैं. सतीश पूनिया ने जयपुर में नगरीय निकाय चुनाव में

मतदान करने के बाद चर्चा में कहा कि पंजाब में नशा एक बड़ी चुनौती है. नशे ने पंजाब की सुख शांति और भाई चारे की पुरानी पहचान को प्रभावित किया है. हमारी सरकार नशे के खिलाफ ठोस काम करेगी. पंजाब में सीएम फेस के मुद्दे पर पूनिया ने कहा कि हम सामूहिक रूप से चुनाव लड़ेंगे. पूनिया को हाल ही में बीजेपी ने पंजाब प्रभारी की जिम्मेदारी दी गई है. उसके बाद पूनिया वहां अपनी प्लानिंग पर काम शुरू कर दिया है. पूनिया और पायलट राजस्थान में अपनी-अपनी पार्टी की कमान संभाल चुके हैं.

# राहुल के खिलाफ नारे पड़े भारी

## दिल्ली में प्रदर्शन करने वाले 29 नेताओं को पार्टी का नोटिस

**नवभारत न्यूज़ नेटवर्क**

**पटना, 11 सितंबर. बिहार कांग्रेस में अंदरूनी नाराजगी अब कार्रवाई तक पहुंच गई. राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात की कोशिश के बाद भी बात नहीं बनी तो नाराज नेताओं ने दिल्ली में पार्टी नेतृत्व के खिलाफ प्रदर्शन किया.**

अब इस प्रदर्शन का असर 29 नेताओं पर पड़ा है. बिहार प्रदेश कांग्रेस की अनुशासन समिति ने सभी को कारण बताओ नोटिस जारी किया. नेताओं से 72 घंटे के भीतर जवाब मांगा गया. नोटिस में पार्टी-विरोधी गतिविधियों और अनुशासनहीनता का आरोप लगाया गया है. मामला 8 सितंबर

का है. इन नेताओं पर आरोप है कि उन्होंने नई दिल्ली में एआईसीसी कार्यालय के पास बिहार कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ हुए विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया था. अनुशासन समिति के चेयरमैन कपिलदेव प्रसाद यादव की ओर से जारी नोटिस में इसे पार्टी-विरोधी गतिविधि और अनुशासनहीनता बताया गया है. समिति के मुताबिक, प्रदर्शन में नेताओं की सक्रिय भागीदारी पार्टी की नीति, अनुशासन और निर्देशों का उल्लंघन है.

# नवरात्रि में महिला आरक्षण बिल लाने की तैयारी

### ▶ बिल के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाने पर फोकस

**नवभारत न्यूज़ नेटवर्क**

**नई दिल्ली, 11 सितम्बर. सरकार ने संसद का विशेष सत्र बुलाने का विकल्प फिलहाल खुला रखा है. संसद के मॉनसून सत्र का सत्रावसान नहीं किया था. ऐसे में अटकलें लगाई जा रही थीं कि सरकार विशेष सत्र बुला सकती है लेकिन अब तक सरकार की तरफ से विशेष सत्र को लेकर कोई भी आधिकारिक बयान नहीं आया है.**

सरकार ब्रिक्स समिट के बाद विशेष सत्र को लेकर फैसला कर सकती है. ब्रिक्स के बाद सरकार यह तय करेगी कि महिला आरक्षण और परिसीमन बिल को पारित कराने के लिए विशेष सत्र बुलाया जाए या नहीं. अगर सरकार तय करती है कि विशेष सत्र नहीं बुलाना है तो मॉनसून सत्र का सत्रावसान कर दिया जाएगा लेकिन अगर सरकार विशेष सत्र बुलाने का फैसला करती है तो नवरात्रि के दौरान सत्र बुलाया जा सकता है.

कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने एक्स पर पोस्ट करते हुए इस पर सवाल भी उठाए हैं. उनका कहना है कि मॉनसून सत्र को खत्म हुए 29 दिन हो चुके हैं लेकिन सत्रावसान नहीं किया गया. उन्होंने सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि यह सरकार अपना ही रिकॉर्ड तोड़ रही है. उन्होंने कहा है कि सरकार सोच रही है कि इससे विपक्ष घबरा जाएगा लेकिन असल में ऐसा बिल्कुल नहीं है.

### धर्मांतरण विवाद ▶ धमतरी जिले में महिला की मौत के बाद हिंदू रीति से हुआ अंतिम संस्कार

# गंगाजल पिलाकर धर्मांतरित परिवार की घर वापसी

**नवभारत न्यूज़ नेटवर्क**

**धमतरी, 11 सितम्बर. छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में धर्मांतरित महिला के अंतिम संस्कार को लेकर आपत्ति जताई गई है. मामले जेल के नवागांव का है. महिला के भाई महिला का अंतिम संस्कार ईसाई धर्म के अनुसार करना चाहते थे लेकिन ग्रामीणों ने इसका विरोध किया.**

ग्रामीणों ने कहा कि हमारे गांव में अंतिम संस्कार हिन्दू रीति-रिवाज के साथ ही किया जाएगा. मामला सिहावा थाना क्षेत्र के नवागांव का है. यहां रहने वाली पियन साहू का बधुवार को अचानक निधन हो गया था. पियन

बाई तलाकशुदा थी. पति से तलाक के बाद वह अपने भाइयों के साथ रहती थी. पियन साहू की मौत के बाद परिजनों ने अंतिम संस्कार की तैयारी शुरू की, लेकिन ग्रामीणों और समाज के लोगों ने ईसाई धर्म से अंतिम संस्कार का विरोध किया. अंतिम संस्कार गांव और समाज की परंपरा के अनुसार किया जाना चाहिए. ग्रामीणों और समाज के लोगों ने परिवार पर धर्म परिवर्तन कर गांव की परंपराओं से अलग रहने का आरोप लगाया.परिवार और ग्रामीणों के साथ चली कई घंटे की बैठक के बाद परिवार ने इस बात की सहमति जताई की वह हिन्दू धर्म और अपने समाज के साथ रहने को तैयार है.

> सहमति बनने के बाद मृतका के पिता और भाई को गांव के मंदिर ले जाया गया. वहां पारंपरिक धार्मिक विधियों के तहत उनके पैर धुलवाए गए, गंगाजल और तुलसी पत्र ग्रहण कराए गए तथा इष्ट देवी की पूजा-अर्चना करवाई गई. इन धार्मिक प्रक्रियाओं के साथ घर वापसी की रस्म पूरी की गई. घर वापसी की प्रक्रिया पूरी होने के बाद तीजन बाई साहू का अंतिम संस्कार गांव के श्मशान घाट में हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार किया गया. पूरे विधि-विधान के साथ दाह संस्कार संपन्न कराया गया और परिजनों तथा ग्रामीणों ने मिलकर अंतिम संस्कार की प्रक्रिया पूरी की.

### यूपी में भाजपा का बूथ ऑपरेशन, 18,900 सीटों पर नजर

इधर, उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव की सियासी जंग फतह करने के लिए भाजपा अब पूरी तरह से एक्टिव हो गई है. सीएम योगी आदित्यनाथ अलग-अलग इलाकों में जनसभाएं कर भले ही सियासी माहौल बनाने में जुटे हों, लेकिन भाजपा एक रिकवरी प्लान पर भी काम कर रही है. इसके तहत 2024 में जिन विधानसभा सीटों पर हार मिली है, उनके एक-एक बूथ की रिपोर्ट तैयार की जा रही है. भाजपा सत्ता की हैट्रिक लगाने के लिए 'हाइपर-लोकल' मोड में उतर गई है. मकसद बिल्कुल साफ है, हर बूथ, हर नंबर और हर वोट पर ध्यान देना. पार्टी 2024 के लोकसभा चुनावों में मिली हार को सिर्फ एक बड़ी राजनीतिक हार के तौर पर नहीं देख रही है. उसने डेटा की गहराई से जांच की है और उन खास पोलिंग बूथों की पहचान की है, जहां 2022 के विधानसभा चुनावों और 2024 के लोकसभा चुनावों के बीच उसका सपोर्ट बेस कम हुआ. पार्टी ने 2022 में जिन 18,900 बूथों पर जीत हासिल की थी.